लोक नाट्य
डा. संतराम देशमुख

काफी लोकप्रिय हुआ एक रात का स्त्री राज

एक समय था जब लोक नाट्य के प्रति काफी रुझान दर्शकों में रहा है। यह वह दौर में था जब लोक नाट्य अपने नए पन और नए अंदाज में प्रस्तुति देखने मिल रही थी। कलाकार भी नवाचार को बढ़ावा दे रहे थे। इसी समय दाऊ रामचन्द्र देशमुख जी भी लोक नाट्य में नव प्रयोग कर रहे थे। दाऊ जी इस समय चंदैनी गोंदा के प्रदर्शन में नित नवीनता लाने में लगे हुए थे। वे अपने प्रस्तुति में नए किरदार और उनका सामाजिक सरोकार का प्रभावी स्वरूप को हमेशा संतुलन बनाने में मंथन करते रहते थे। दर्शकों में मनोरंजन के साथ ज्ञान वर्धक संस्करण भी देना चाहते थे। अपने पहले के लोक नाट्यों को मिल रहे अपार सफलता के कारण उन्होंने 1973 में एक नया नाटक मंचन किए - एक रात का स्त्री राज। वे प्रस्तुति के लिए विशेष अवसर की तलाश करते थे। खासकर जब छत्तीसगढ़ी परिवारों में बेटे की बारात दुल्हन के गांव चली जाती थी तब दो दिनों के लिए घर में पुरुषों की अनुपस्थिति में स्त्रियों का साम्राज्य स्थापित हो जाया करता था। तब रिश्ते की विभिन्न आयु वर्ग अनेक महिलाएं घर में रह जाती थी। ऐसे समय में कुछ चुहलबाजी, कुछ हंसी ठिठोली, कुछ नाच गाना, कुछ अभिनय, नकल के कार्यक्रम स्व स्फूर्ति कई बड़ी उम्र की महिलाएं करती थीं। इस समय के परिकल्पना को उन्होंने इस लोक नाट्य के माध्यम से सकारात्मक पक्ष की ओर संकेत करते अच्छा मंचन करते रहे।

लोक साहित्य
डा. यशेश्वरी ध्रुव

साहित्य में सांस्कृतिक चित्रण

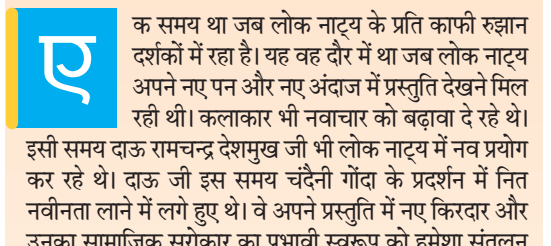

साहित्य में लोक संस्कृति का चित्रण रहता है। तदनुरूप लोकजीवन अभिव्यंजित होता है। इसी कारण साहित्य के अध्ययन से इतिहास, भूगोल, पुरातत्व, चित्रकला, मनोविज्ञान जैसे अनेक विषय पर तथ्य समाहित रहते हैं। इसलिए इन सभी समाज विज्ञानों के अध्येताओं का साहित्य से गहरा सरोकार होता है। यहां तक कि प्रत्येक जनपद के लोकभाषा के साहित्य और वहां की लोक वार्ता में प्राचीन परंपरा से प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों झाड़ फूंक तंत्र मंत्र टोना टोटका आदि का समावेश है। लोक जीवन में मान्य परंपराओं के विभिन्न प्रतिमान निर्धारित हैं। इनके पीछे प्रमुखतः लोक विश्वास, लोक मान्यताएं, धर्म, समाज, संस्कृति, आस्था आदि प्रमुख कारण हैं। लोक मान्यताओं के प्रतिमानों में जन विश्वास प्रमुख कारक हैं। सहज सरल मानव जो नागर सभ्यता, संस्कृति से दूर जंगल, पहाड़, और गांवों में निवास करता है, प्रकृति के उन सभी अनाम रहस्यों, प्रकृति के संरक्षक कारकों के प्रति आस्था विश्वास प्रकट कर उनके प्रति आदर भाव रखते हुए उनकी अभ्यर्थना करता है। अभ्यर्थना के इस परिदृश्य में नदी, तालाब, पेड़, प्रस्तर खंड तथा विभिन्न प्रकार के प्रतीक आते हैं जो लोक जीवन में परम्परा से प्रेषित होते आ रहे हैं। संस्कृति व्यापक संदर्भों में जीवन की पद्धति से प्रयोगात्मक तौर पर जुड़ी है इसलिए साहित्य के निकष पर निखरने के लिए संबद्ध सभी सांस्कृतिक तत्वों और समाजोपयोगी विषयों से उसका जुड़ाव अवश्यंभावी है।

पुरातात्विक
ललित शर्मा

सिंघनगढ़ में प्राचीन गढ़ के अवशेष

सिंघनगढ़ पहाड़ी के ऊपर पहुंचने पर पत्थरों की बनी हुई दीवाल दिखाई देती है। थोड़ा आगे बढ़ने पर लगभग 8 फीट ऊंची सिंह द्वार है। द्वार के सिर दल पर कमलांकन है। अन्य कोई शिल्प इस दीवार पर दिखाई नहीं देती। द्वार के दोनों तरफ भग्नावशेष रखे हुए हैं। द्वार से भीतर प्रवेश करने पर चौकीनुमा प्रस्तर अवशेष दिखाई देते हैं जो ऊपर से सपाट तथा इसके चारों कोनों पर पाया है। इसका वजन लगभग 50 किलो अनुमानित है। इसे किसी भवन की छत का अवशेष या मंदिर का वितान मानते हैं। इसके आसपास अनगढ़ पत्थरों की दीवार बनी हुई है। इस स्थल से कुछ ही दूरी पर गेहूं पीसने की प्राचीन चक्कियां एवं स्तंभों के आधार हैं। इस संपूर्ण स्थल का बारीकी से निरीक्षण करने पर किसी प्राचीन गढ़ होने का आभास होता है। यह भी स्पष्ट होता है कि इस स्थान मिले अवशेषों के आधार पर बसाहट भी रही होगी। अभी यहां आदिवासी लोग निवास करते हैं। यहां दोनों नवरात्रि पर्व भक्तों द्वारा ज्योति कलश प्रज्वलित किए जाते हैं। दूर से आने वाले लोग नवरात्रि पर्व में ठहरने के लिए मचान बना रखे हैं।

धमतरी जिला रायपुर से कांकेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर मरकाटोला घाट से तीन कि मी दूरी पर घने जंगल के बीच कंकालीन देवी विराजित हैं। इस माता की स्थापना को सैकड़ों वर्ष पहले का बताया जाता है। स्थापना काल में माता के प्रांगण में शेर, चीते जैसे जंगली जानवरों का वास रहता था, जो भक्तों को कभी हानि नहीं पहुंचाए। मान्यता है कि आसाध्य रोगी माता के दरबार में आने से स्वस्थ हो जाते हैं। मान्यता यह भी है कि फाल्गुन माह में होलिका की आग को यह देवी अपने अन्य आश्रित देवों के साथ के साथ खेलती हैं।

आस्था: कुलदीप सिंह

फागुन माह में मेला-मड़ई संग देवी-देवता पूजन

इस देवी के सहायक के रूप में बैहा देवी हमेशा विराजमान रहती हैं। ऐसी भी धारणा है कि इसी स्थान पर किसी समय एक भक्त मां काली की आराधना में तपस्यारत था, जिसे मां काली की कृपा से सिद्धि प्राप्त हुई थी। माता की सेवा में लीन रहते यह भक्त देवत्व को प्राप्त हुआ। प्रारंभिक समय से ही देवी स्थल बलि नहीं दी जाती। माता के इस स्थल को साधना स्थली माना जाता है। इस देवी के स्थापना वाले ग्राम से लगा हुआ एक तुम्ब नामक झरना है, जो बारह महीने झरता है। यहीं से चरण स्पर्श करते हुए एक धारा देवरानी जेठानी के नाम से प्रवाहित होती है जो आगे चल कर खारुन नदी के रूप में दुर्ग जिले के मध्य की भूमि को हरियाली बांटती हुई शिवनाथ नदी में मिल जाती है। नदी का जल प्रवाह निरन्तर बारह महीने होता रहता है। इसी नदी के किनारे महादेव मंदिर घाट रायपुर में फागुन पूर्णिमा को विशाल मेला भरता है। इसी तरह फागुन कृष्ण तेरस को दुर्ग तहसील के रानीतराई के समीप कौही ग्राम में विशेष धार्मिक कार्यक्रमों के साथ लोग शिवरात्रि मेले का आनंद लेते हैं।

पर्यटन: डी पी देशमुख

कभी नहीं सूखता राम झरना का जल स्रोत

सरगुजा जिला मुख्यालय से लगभग 50 कि मी दूर सीतापुर में आम्रकुंज और प्राकृतिक दृश्य काफी मनमोहक है। चारों ओर जंगल होने के कारण किसी भी मौसम में यहां हरियाली देखी जाती है। इस स्थल को तपोभूमि कहा जाता है क्योंकि देवी देवताओं के अनेक प्रमाण और प्राचीन कलात्मक मंदिर देखने को मिलते हैं। यह भी माना जाता है कि राम वन गमन के समय यहां ऋषि मुनियों से भेंट कर विश्राम भी किए थे। इसी स्थल पर भूपदेव स्टेशन के पास राम झरना है। यह झरना पहाड़ी के ऊपर से नीचे गिरती है यह दृश्य देखने में बहुत सुंदर लगता है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने इस झरने पर स्नान किए थे इस कारण झरने का नाम राम झरना रखा गया। इस झरने की मुख्य विशेषता है कि यह वर्ष भर पानी का स्रोत बराबर बना रहता है कभी सूखता नहीं है। दूर दूर से पर्यटक प्रकृति का आनंद लेने यहां पहुंचते रहते हैं। इस रमणीय स्थल को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जा रहा है।

सुरता
प्रेम सागर कश्यप

कला और साहित्य जगत में अपनी प्रतिभा से पहचान बनाने वालों में : लक्ष्मण दास महंत

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर अंचल अंतर्गत जिला जांजगीर के ग्राम घिवरा में लोक कवि के रूप में विख्यात लक्ष्मण दास महंत का जन्म हुआ था। साहित्य के साथ संगीत में आपकी विशेष रुचि थी, आपको चिकारा वादन का मास्टर कहा जाता था। इसके साथ ही तबला, हारमोनियम और ढोलक वादन भी आप करते थे। कई नाचा पार्टियों में आपने काम किए। आपके कार्यक्रम को देख कर बैरिस्टर छेदीलाल, राजेंद्र कुमार, लाला साहेब, इंद्रजीत सिंह, भास्कर सिंह और ठाकुर गोलन सिंह जैसे नामी हस्तियां भी सराहना करते थे। आपके स्वरचित गीतों का प्रसारण आकाशवाणी रायपुर, नागपुर, और इंदौर केंद्रों से भी होती थी। आपकी प्रसिद्धि इतनी अधिक थी, कि आपको सन 1955 में सोवियत संघ के प्रधानमंत्री बुलगानिन और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम सचिव खुशचेव के दिल्ली आगमन पर उनके सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया गया था। आपके गायन और वादन से प्रभावित होकर तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने आपको पुरस्कृत भी किए थे। राजा महाराज रियासत से जुड़े लोग भी आपके गायन और वादन को सुनने के लिए आपको आमंत्रित करते रहते थे। आप छत्तीसगढ़ ही नहीं अन्य राज्यों में भी अपनी प्रस्तुति देते रहते थे जिसमें उड़ीसा के संबलपुर और बलांगीर राजघराने भी गए। आप हिन्दी और छत्तीसगढ़ी दोनों में लेखन करते थे। आपके 56 रचनाओं की रिकॉर्डिंग हुई है। आप प्रकृति सहित जीवन के हर पहलुओं को अपनी रचना में स्थान दिया है। उनकी एक रचना की बानगी -

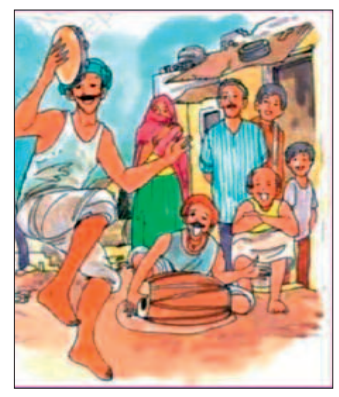

चार दिन म सुखा फेर, चार दिन म गिरय पानी।
चार दिन के बाला पन, चार दिन जवानी।

आपकी एक भी कृति प्रकाशित नहीं हो पाई थी। इस विलक्षण प्रतिभा के धनी का 42 वर्ष की अल्प आयु में 15 अगस्त 1962 को मृत्यु हो गई।

ऐतिहासिक
डा. रमेंद्रनाथ मिश्र

छत्तीसगढ़ नामकरण का रोचक इतिहास

सन 1114 के एक शिलालेख में ' लाढ़ा दक्षिण कोसलार्थ खिमड़ी लांजीका ट्रैप कोसलार्थ ' से भी दक्षिण कोसल का नाम स्पष्ट होता है। इस पर प्रयागदत्त शुक्ल के अनुसार 36 गढ़ होने के कारण नाम छत्तीसगढ़ पड़ा। सन 1487 में खैरागढ़ के चारण कवि ने लिखा है - लक्ष्मी विधि राय सुनो चित्त दे, गढ़ छत्तीसगढ़ के न गढ़ैया रही। मरदमी रही नहीं मरदन के, फेर हिम्मत से लड़इया रही। सन 1689 में रतनपुर के मैथिल कवि गोपाल मिश्र ने खूब तमाशा में एवं 150 वर्ष बाद बाबू रेवाराम कायस्थ ने विक्रम विलास में इसका खूब प्रयोग किया।

लाल पद्युमन सिंह ने महाकौशल को ही छत्तीसगढ़ माना है। अकबर युगीन ग्रंथों में रतनपुर राज्य का उल्लेख मिलता है, संभवतः छत्तीसगढ़ की राजधानी होने के कारण तदयुगीन दरबार के लेखकों ने इसका प्रयोग किया हो। चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रतनपुर राज्य दो भागों में बंट गया। रतनपुर और रायपुर राज्य में 18-18 गढ़ थे। शिवनाथ और महानदी प्रायः सीमा रेखा थी। इस प्रकार गढ़ों के आधार पर छत्तीसगढ़ नामकरण हुआ। यद्यपि गढ़ों की संख्या में घट बढ़ समय समय पर होता रहा। रतनपुर - मणिपुर राज्य नाम लुप्त हो गया। शासकीय आधार पर छत्तीसगढ़ नामकरण का प्रस्ताव 1795 में ब्लंट ने रखा था, जिसने छत्तीसगढ़ की यात्रा की थी। 1818 तक रायपुर प्रशासन का केन्द्र बिंदु बन गया, तथा रतनपुर का प्राचीन वैभव खंडहरों में खो गया। जे रोजर वांस इग्नू ने 1820 में सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ प्रॉविंस/ सूबा पर अपनी रिपोर्ट तैयार की। जेकिंस ने 1827 में छत्तीसगढ़ के जमींदारों के बारे में प्रतिवेदन दिया। कालांतर में पूर्णरूपेण अंग्रेजी राज्य स्थापित होने पर 1854-55 में इलियट ने इस क्षेत्र का भ्रमण कर प्रतिवेदन तैयार किया। वस्तुतः छत्तीसगढ़ नाम मध्य युग की देन है। प्रशासनिक दृष्टि से मराठों एवं अंग्रेजों ने बाद में इसे स्पष्ट किया। प लोचन प्रसाद पाण्डेय, बाबू प्यारे लाल गुप्त,राय बहादुर हीरालाल, बेगलर जैसे अनेक मूर्धन्य इतिहासकारों ने अपने अपने निष्कर्ष राज्य के नामकरण पर दिए। इनमें प्रायः सभी की सहमति लगभग एक जैसे ही रही। छत्तीस वर्षों तक छत्तीसगढ़ राज्य आंदोलन से संबद्ध रहा। अंत में राज्य का नाम कोसलांचल और राज्य रखने की बात आई। अंत में वैधानिकता के कारण जो विधेयक छत्तीसगढ़ राज्य के नाम से पारित किया गया वह हमें स्वीकार्य रहा-

सुग्घर सुग्घर सुख समाए हे, इहां के जुन्ना परिपाटी म।
महानदी के घाटी म, अऊ छत्तीसगढ़ के माटी म।